॥ श्री ॥

नीतिसार

NITISAARA

इन्द्रनन्दि · १०वीं शती · अभिलेख ८३/९०

श्री बप्पनन्दि → **इन्द्रनन्दि** → श्री नेमिचन्द्राचार्य (सिद्धान्त चक्रवर्ती)

संक्षिप्त परिचय

आचार्य इन्द्रनन्दि कृत — नीति और आचार के सार-वचनों का संग्रह।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

नीतिसार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ८३ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता इन्द्रनन्दि; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १८५) के अनुसार इनका समय ९३९ है तथा गुरु श्री बप्पनन्दि। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "श्रुतावतार" उल्लिखित है। इसी लेखनी से श्रुतावतार भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, प्रद्युम्नचरित, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

श्रुतावतार

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित · प्रद्युम्नचरित · गद्यचिन्तामणि · क्षत्रचूड़ामणि · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ८३ — मूल छायाचित्र

← श्रुतावतार

भक्ति-संग्रह →